अमर उजाला

नई दिल्ली। सोमवार। 2 दिसंबर 2013

युवा नोएडा। ग्रेनो

आकांक्षा ने शूटि
गाजियाबाद की उ
शूटिंग रेंज में ना
पदक जीते। आक
शूटिंग और 25 र

बिमटेक के कार्यक्रम में दलाई लामा बोले

पैसा इतना जरूरी नहीं, जितनी खुशी

अमर उजाला

बिमटेक की ओर से आयोजित कार्यक्रम में पौधारोपण करते दलाई लामा।

अमर उजाला ब्यूरो

ग्रेटर नोएडा। तिब्बती धर्म गुरु दलाई लामा का कहना है कि मनुष्य के लिए पैसा इतना जरूरी नहीं है, जितनी खुशी। उन्होंने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए जितनी फिजिकल फिटनेस जरूरी है, उससे कहीं ज्यादा मानसिक शांति आवश्यक है। वे रविवार को जेपी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नालॉजी की ओर से आयोजित कार्यक्रम में हैप्पीनेस एंड सक्सेस पर विचार व्यक्त कर रहे थे।

कार्यक्रम में उद्यमियों, प्रोफसरों, चिकित्सकों, बुद्धिजीवियों और इंस्टीट्यूट के छात्रों के अलावा भूटान से आए 100 विद्यार्थी भी शामिल हुए। दलाई लामा ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। उन्होंने वहां मौजूद

- भूटान के सौ विद्यार्थी भी हुए कार्यक्रम में शामिल
- तिब्बती धर्म गुरु ने दिए सवालों के जवाब

लोगों के सवालों के जवाब भी दिए। इस दौरान उन्होंने लोगों को हंसाया भी। दलाई लामा ने कहा कि जो लोग बचपन में मां को खो देते हैं, उनमें से ज्यादातर खुद को मानसिक शांति से उपेक्षित समझते हैं। वैज्ञानिकों ने भी इस बात को माना है। मां को अपनी बातें बताने से शांति का अनुभव होता है। उन्होंने कहा कि जीवन में तनाव नहीं होना चाहिए। मनुष्य को हमेशा खुश रहना चाहिए। मानसिक शांति से ही खुश रहा जा सकता है। मोरल और विजडम में से क्या महत्वपूर्ण है, इस सवाल पर दलाई लामा ने कहा, 'विजडम'। इस दौरान बिमटेक के डायरेक्टर डॉ. हरवंश चतुर्वेदी ने कहा कि दलाई लामा अहिंसा के पक्षधर हैं। जयश्री मोहटा ने धर्म गुरु और बिड़ला परिवार के पुराने संबंधों की याद ताजा की। इस पर दलाई लामा ने कहा कि 1959 में जब वह भारत आए थे तो मसूरी में बिड़ला गेस्ट हाउस में ही ठहरे थे। आदित्य बिड़ला सेंटर फॉर कम्युनिटी इंटिवेटिव्स एंड रूरल डेवलपमेंट की चेयरपर्सन राजश्री बिड़ला ने कहा कि 50 साल से अधिक समय से दलाई लामा अहिंसा का संदेश दे रहे हैं। राजश्री बिड़ला, जयश्री मोहटा और डॉ. हरवंश चतुर्वेदी ने उन्हें उड़ीसा की हस्त निर्मित एक कलाकृति भेंट की। दलाई लामा ने यहां एक पौधा भी लगाया।

रिफ्यूजी बनकर आया, मेहमान बनाया

दिलीप चतुर्वेदी

भारत के बारे में तिब्बती गुरु ने रखे विचार

ग्रेटर नोएडा। नोबल पुरस्कार पा चुके तिब्बती धर्म गुरु दलाई लामा भावनात्मक रूप से भारत से बहुत निकट हैं। रविवार को बिमटेक की ओर से आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि वह रिफ्यूजी बनकर आए थे, लेकिन देश ने उन्हें मेहमान की तरह रखा है।

धर्म गुरु ने कहा कि चीन में हालत बिगड़ने पर उन्हें अपना घर छोड़ना पड़ा, लेकिन भारत के रूप में उन्हें एक नया बड़ा घर मिल गया। उन्होंने कहा, 'मैंने भारत में बहुत कुछ सीखा है। यहां पर अहिंसा सीखी है।' दलाई लामा ने कहा कि भ्रष्टाचार भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व के हर देश में है। भारत धर्म निरपेक्ष देश है। यहां पर विभिन्न धर्म के लोग मिलजुल कर रहते हैं। सभी को आजादी मिली है।

वहीं ऐसे कई मुस्लिम देश हैं, जहां शिया और सुन्नी लड़ रहे हैं। भारत में सभी धर्मों का सम्मान किया जाता है। ग्रेटर नोएडा आते समय ऊंची-ऊंची इमारतों को देखकर उन्होंने कहा कि यह विकास का प्रतीक है।

'स्वतंत्र राष्ट्र नहीं चाहते हम'

ग्रेटर नोएडा (ब्यूरो)। दलाई लामा ने कहा कि वह चीन से स्वतंत्र राष्ट्र की मांग नहीं कर रहे, क्योंकि ऐसा करने से युद्ध होगा, हिंसा होगी और लोग मारे जाएंगे। उन्होंने कहा कि वह ऐसा नहीं चाहते। वह अहिंसा में विश्वास करते हैं लेकिन चीन उन्हें सांस्कृतिक और धार्मिक स्वायत्तता तो दे। धर्म गुरु ने कहा कि अब उन्हें चीन में भी समर्थन मिलने लगा है। वहां के बहुत से लोग उनकी इस मांग के पक्ष में खड़े होने लगे हैं। इसका प्रमाण यह है कि चीन में उनकी मांग के समर्थन में एक हजार आर्टिकल लिखे जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि कई देश उनकी मांग को जायज मानते हैं।